بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 26 जुलाई 2024 स्थान हदीक़तुल मेहदी, यू.के.

जलसा सालाना के कार्य-कर्ताओं तथा मेहमानों को स्वर्णिम उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-26.07.24

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-अल्लाह तआला की कृपा से आज जलसा सालाना बर्तानियः शुरु हो रहा है तथा हज़ारों लोग यहाँ दीनी तथा रूहानी वातावरण से लाभान्वित होने के लिए आए हैं। इन दिनों में यहाँ हदीक़तुल मेहदी में एक अस्थाई नगर बनाया गया है ताकि इस माहौल मे रह कर, हम दुनिया के झमेलों से अलग होकर अपनी अपनी रूहानी एवं नैतिक स्थितियों को सुन्दर बानाने की चेष्टा करें। अतः ऐसे हालात में आने वालों को किसी भी प्रकार की सुविधा उपलब्ध होने से अधिक इस बात की चिंता होनी चाहिए कि किस तरह हम इस माहौल से अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु इंसान के साथ मानवीय आवश्यकताएँ तथा दुविधाएँ भी लगी हुई हैं इस लिए व्यवस्थापकगण आने वालों को हर सम्भव सुविधा पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं तथा इस उद्देश्य क लिए विभिन्न विभाग जलसा सालान के दिनों में स्थापित किए जाते हैं। हज़ारों कार्य-कर्ता स्वयं सेवा की भावना से अपनी सेवाएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए पेश करते हैं।

इस सम्बंध में पहले तो मैं समस्त कारकुनों को इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि वे अपनी ड्यूटियाँ बेहतर रंग में अन्जाम देने की कोशिश करें। जलसे के मेहमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलै. के मेहमान समझ कर सेवा करें। मेहमान की ओर से, आपके विचार में, यदि कोई ऊँच नीच भी हो जाती है तो उसको अनदेखा करें। अल्लाह तआला की कृपा से हर देश में मेहमान नवाज़ी तथा उच्च नैतिक आचरण का प्रदर्शन जमाअते अहमदिया का एक विशिष्टता का निशान बन चुका है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मेहमान का दिल तो शीशे के समान होता है, भावुक होते हैं, उनका ध्यान रखना चाहिए। यहाँ आने वाले अधिकांश अहमदी तो यह बात भली भांति समझ कर आते हैं कि कठिनाईयाँ एवं असुविधाएँ सहन करनी पड़ेंगी। कुछ मेहमान जो अभी जमाअत में शामिल नहीं हुए उनका हर हाल में विशेष ध्यान रखना पड़ता है। सब विभागों को चाहे ट्रैफ़िक है, पर्किंग की ड्यूटी है, खाना खिलाने वाले हैं अथवा अनुसाशन, सुरक्षा, सफ़ाई, पानी की सप्लाई इत्यादि अभिप्रायः यह कि किसी भी विभाग की ड्यूटी हो, चेष्टा करें कि यथासम्भव मेहमान के लिए सुविधा का प्रबन्ध हो तथा उसको किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे।

मेहमानों को मैं कहना चाहता हूँ कि आप लोग एक नेक उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान बन कर यहाँ आए हैं। सांसारिक प्रतिष्ठा तथा सेवा के बजाए उस उच्च नैतिक शिष्टाचार का विकास अपने सम्मुख रखें जो एक वास्तविक मुसलमान की विशेषता है। ख़ुदा के लिए यात्रा करने वालों का सांसारिक सुविधाओं की ओर कम ध्यान होता है। कई बार व्यवस्था में झोल दिखाई देता है परन्तु उसको अनदेखा करना चाहिए। यदि हर एक आने वाले अहमदी मुसलमान के दिल में यह भावना हो कि हमारा उद्देश्य रूहानी मायदा (दस्तरख़्वान) प्राप्त करना है तो मेज़बान एवं मेहमान दोनों मुहब्बत और प्यार के साथ ये दिन व्यतीत करेंगे।

प्रबन्धकों का प्रयास यही होता है कि आने वाले समस्त मेहमानों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाए किन्तु फिर भी कई बार चूक हो जाती है तो इसे मेहमानों को अनदेखा करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों का अति मान सम्मान किया करते थे किन्तु मेहमानों को यह भी फ़रमाया करते थे कि अपनी आवश्यकता बिना संकोच के बयान कर दिया करो, किन्तु यह सामान्य स्थिति की बात है। जलसे के मेहमानों को आप अल. फ़रमाया करते कि एक ही व्यवस्था हो, हर मेहमान का उसी प्रकार स्वागत किया जाए जो एक व्यवस्था के अंतर्गत है।

आप अलै. मेहमानों के दिल में यह बात बिठाते थे कि तुम्हारे यहाँ आने का मूल उद्देश्य दीन सीखना तथा अपने मन एवं आत्मा को स्वच्छ एवं पवित्र करना और अल्लाह तआला की निकटता के मार्गों में आगे बढ़ने का प्रयास करना है। अतएव यही मूल उद्देश्य है जिसके लिए आप सब हर साल यहाँ एकत्र होते हैं। जलसागाह में बैठ कर जलसे के प्रोग्राम तथा सम्बोधनों को ध्यान पूर्वक सुनें तथा उनसे लाभान्वित होने का प्रयास करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से वह जमाअत प्रदान की है जिसने देशों एवं राष्ट्रों की सीमाओं एवं सम्प्रदायों को समाप्त कर दिया है तथा एक महान बन्धुत्व की आधार शिला पड़ चुकी है। आप अलै. ने जलसे का एक यह भी उद्देश्य बयान फ़रमाया है कि जमाअत के बन्धुत्व के सम्बंध सुदृढ़ हों, इसके लिए स्वभाविक है कि दूसरों से मेल जोल भी होता है किन्तु मोमिन के लिए अपने समय का व्यापक उपयोग अत्यंत आवश्यक है इस लिए जलसे के पूरे दिन के प्रोग्रामों के बाद जो भी अवसर मिले, उसमें फिर आपस में मिल बैठें और बातें करें तथा सम्बंध बढ़ाएँ, परन्तु उसमें इतने व्यस्त न हों कि समय नष्ट हो।

जब इतनी बड़ी संख्या में लोग जमा हों तो कई बार कुछ ग़लतियाँ भी हो जाती हैं। याद रखें, कि वास्तविक मोमिन क्रोध को दबाने वाले होते हैं। अतएव जलसे की पवित्रता को सामने रखें तथा एक दूसरे की ग़लतियों को अनदेखा करें। यदि किसी कार्य-कर्ता से कोई ग़लती हो भी जाए तो भी बुरा मानने के बजाए धैर्य दिखाना चाहिए तथा साहस के साथ क्षमा कर देना चाहिए। यदि विकसित साहस पैदा हो जाए तो समस्त झगड़े एवं कटुताएँ समाप्त हो जाएँ। अतः मेहमानों तथा ड्यूटी देने वालों, दोनों को कहता हूँ कि उनका कर्त्तव्य है कि विशाल हृदय दिखाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छानुसार कोशिश यह करनी चाहिए कि परस्पर मुहब्बत एवं बन्धुत्व का उदाहरण बन जाएँ तथा यही अल्लाह तआला ने मोमिनों के बारे में फ़रमाया है। अतएव छोटी छोटी बातों पर उलझने के बजाए कोशिश यह करें कि अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की हमने कोशिश करनी है, जो रुकूअ, सजदों तथा अल्लाह की स्तुति से प्राप्त होता है। हर मेहमान जो यहाँ आया है, अपनी यात्रा को केवल अल्लाह के लिए शुद्ध करने की कोशि करे। कारकुन तथा मेहमान सब याद रखें कि कुछ ग़ैर अज़-जमाअत तथा ग़ैर मुस्लिम भी यहाँ आए होते हैं, यदि उच्च नैतिक आचरण का प्रदर्शन कर रहे होंगे तो यह गुप्त तबलीग़ होगी तथा इसका ग़ैरों पर अति सुन्दर प्रभाव पड़ता है तथा उनका इस्लाम की ओर ध्यान आर्षित होता है तथा वे इस्लाम की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं।

एक आवश्यक चीज़ यह है कि यहाँ आने वाले एक दूसरे को सलाम करने का भी रिवाज दें, अधिकाधिक इसका प्रयास करें। बड़ी बरकत वाली तथा पवित्र दुआ हमें सिखाई गई है। जब मेज़बान तथा मेहमान एक दूसरे को सलाम करते हैं तो जहाँ वे हर एक प्रकार के भय एवं चिंता से मुक्त होते हैं वहाँ यह दुआ एक दूसरे को लाभान्वित करने वाली भी होती है। अतः इस बात की ओर इन दिनों में अधिक ध्यान दें ताकि हम हर ओर सलामती, प्यार तथ मुहब्बत फैलाने वाले बन जाएँ तथा यह माहौल शुद्ध रूप में केवल अल्लाह के लिए बन्धुत्व का वातावरण बन जाए। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर प्रकार के स्वार्थ से अपने आपको पाक करें। इन दिनों में एक इंक़लाब अपने जीवन में पैदा करने का प्रयास करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सलाम को रिवाज दें तथा इसके लिए तुम चाहे किसी को जानते हो या नहीं, उसे सलाम करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक वृत्तांत आपको बताता हूँ। मुसलमानों तथा ईसाईयों में जंग-ए-मुक़द्दस में एक वाद विवाद का आयोजन था और जिस स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ठहरे हुए थे, वहाँ महमान की अधिक संख्या के कारण आयोजक आप अलै. के लिए खाना रखना भूल गए। रात का एक भाग व्यतीत हो गया तथा बड़ी प्रतीक्षा के बाद जब आप अलै. ने खाने के बारे में पूछा तो सब आयोजक बड़े परेशान हो गए कि बहुत देर हो चुकी है, खाना भी रखा हुआ नहीं है तथा बाज़ार भी बन्द हो चुके हैं। यह स्थिति जब हज़रत मसीह मौऊद अलै. को पता चली तो आप अलै. ने फ़रमाया कि इस तरह तकलीफ़ तथा घबराहट की क्या ज़रूरत थी? दस्तरख़्वान (खाना खाने का कपड़ा) पर देखो, जो बचा हुआ खाना है, वही ले आओ। जब वहाँ देखा गया तो रोटियों के कुछ टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, सबज़ी इत्यादि भी नहीं थी। आप अलै. ने फ़रमाया- हमारे लिए यही काफ़ी है और आप अलै. ने वही खा लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क सबसे बड़े आशिक़ और आप स. की सुन्नत के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलै. का यह नमूना था। अतएव हमें भी, जो आप अलै. की जमाअत में शामिल होने का दावा करते हैं, यह धैर्य, साहस, आभार तथा भावनाएँ हर समय दिखाने की आवश्यकता है।

मैं इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि इन दिनों में विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियाँ लगी हुई हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के यूरोप के दौरे को एक सौ साल पूरे हो रहे हैं इस लिए यू.के. की जमाअत ने मर्कज़ी आर्काईव्ज़ के साथ मिल कर विभिन्न चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाई है, उसको अवश्य देखें। इसी तरह अन्य नुमाईशें हैं जो देखने वाली हैं, अवकाश में समय को नष्ट करने के बजाए इन प्रदर्शनियों को देखने की चेष्टा करें।

इन दिनों में सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान दें, सबसे बढ़ कर हमारी सुरक्षा यही है कि अपने दाएँ बाएँ नज़र रखें, परन्तु सबसे बड़ा हथ्यिार हमारे पास अल्लाह तआला की शरण है तथा इस शरण को प्राप्त करने के लिए विशेषतः इन तीन दिनों में दुआओं तथा अल्लाह की स्तुति की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला आप सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि इस पर अमल करने वाले हों तथा यह जलसा हर एक के लिए बरकत वाला हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131